RNI No - RAJHIN/2003/9899 :: Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 April 2018 :: Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd April 2018

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : पंद्रहवा | अंक : बारहवां | अप्रैल–2018

5 नाच रे मन नाच रे
सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

21 मधुरता को कैसे कायम रखें
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

23 डर
सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

33 अमृत वेला
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

संपादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा
9950556671, 8079084601, 9871501999

विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
9667233304, 9928925304

उप संपादक-नन्दनी

सहयोग-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/–

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 193 Website : www.ajaibbani.org

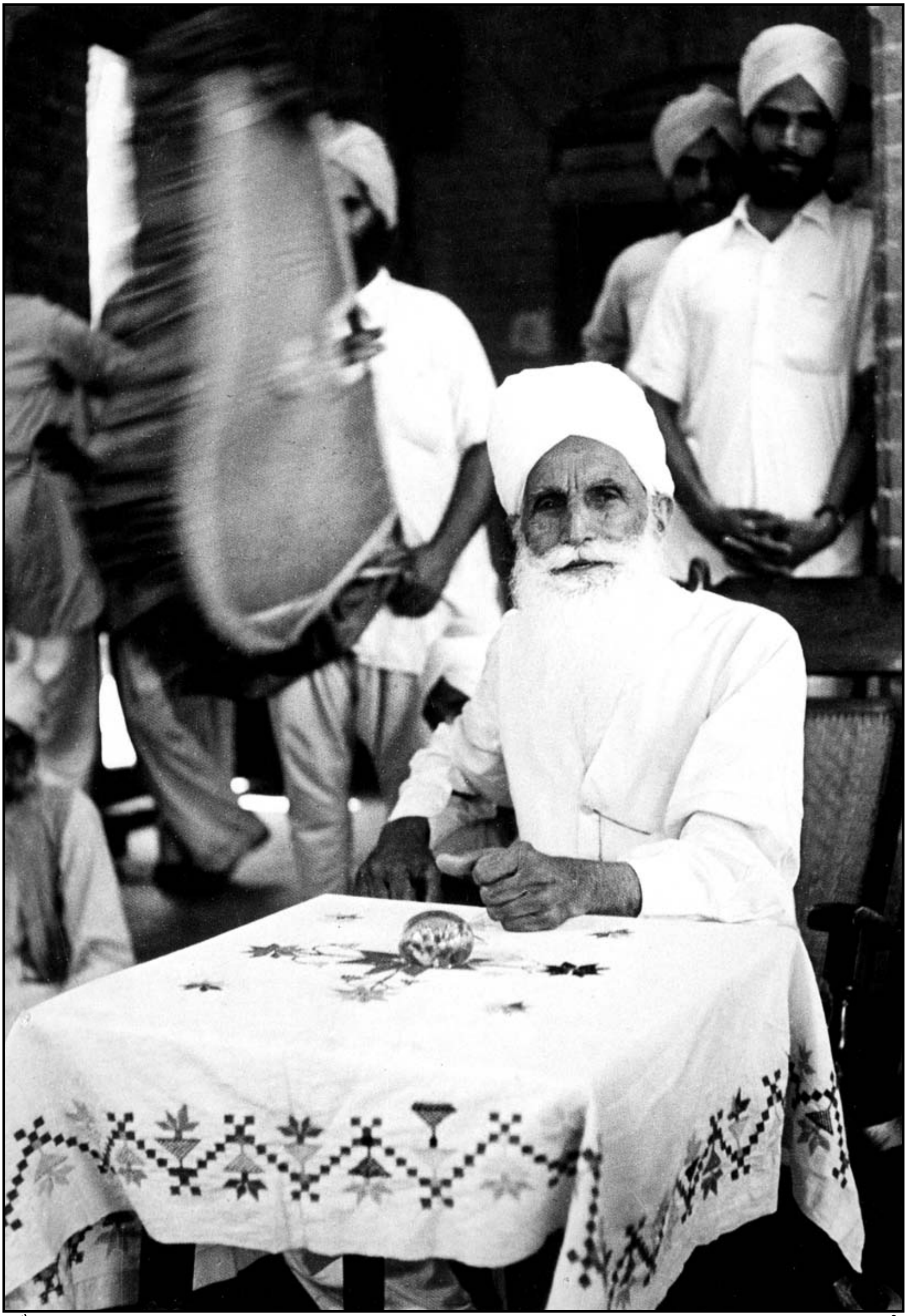

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नाच रे मन नाच रे

(मस्ताना जी की बानी)

नाच रे मन नाच रे, तू सतगुरु आगे नाच रे।
धन सतगुरु का बोलिऐ, तेरा कटे जन्म का पाप रे।।

यह शब्द खेमचंद जी का है। महाराज सावन सिंह जी ने आपका नाम मस्ताना रखा था। आप बलोचिस्तान में पैदा हुए थे, आपको परमार्थ का शुरू से ही शौंक था। आपने अपने घर के अंदर सत्यनारायण का मंदिर बनाया और उस मंदिर में अपनी रोजी–रोटी से कमाकर सत्यनारायण की एक छोटी सी सोने की मूर्ति स्थापित की।

अंदर से यही आवाज आती थी कि खेमचंद! पूरा गुरु ढूंढ नहीं तो काल खाल निकाल देगा। आप इस तलाश में बाहर निकले और आपने नौं गुरु धारण किए लेकिन मन को तसल्ली नहीं हुई। आखिर महाराज सावन सिंह जी ने आपको अंदर दर्शन दिए कि मैं इस जगह हूँ। बलोचिस्तान से डेरा ब्यास पाँच–छह सौ मील की दूरी पर है।

मस्ताना जी पूछते–पूछते पंजाब में आए। महाराज सावन सिंह जी उस समय सिकन्दरपुर में अपनी खेती करवा रहे थे। जब आप हुजूर महाराज सावन सिंह जी के सामने पेश हुए तब हुजूर ने कहा, ''तुमने घर में जो सत्यनारायण का मंदिर बनाया हुआ है, तू उस मरे हुए सत्यनारायण को यहाँ ले आ। मैं तुझे जिंदा सत्यनारायण दूंगा जो तेरे सारे काम करेगा।'' आप बलोचिस्तान गए और मंदिर को गिराकर सत्यनारायण की सोने की मूर्ति उठा लाए।

महाराज सावन सिंह जी ने वाक्य ही आपको जिंदा सत्यनारायण दिया। आप महाराज सावन सिंह जी पर इतने आशिक हुए कि आपकी

शादी कुछ समय पहले ही हुई थी, आपने अपनी घरवाली से कहा, ''अब मेरी शादी सावन शाह से हो चुकी है तू जिसके साथ भी चाहे शादी करके अपना सुखी जीवन बिता सकती है।'' आपकी घरवाली ने कहा, ''ऐसा नहीं हो सकता कि मैं किसी के साथ शादी करूं आप जिसे लेकर आओगे मैं उसके साथ शादी कर लूंगी।'' खेमचंद ने उसे एक आदमी लाकर दिया लेकिन जल्दी ही उस आदमी की मौत हो गई फिर आपने एक और आदमी तैयार किया और उस आदमी को महाराज सावन सिंह जी के चरणो में लेकर गए। महाराज सावन ने खेमचंद से पूछा, ''यह कौन है?'' खेमचंद ने कहा, ''साईं! यह मेरी औरत का खसम है।'' सावन सिंह जी ने हँसकर कहा, ''अच्छा मैं इसे नाम दूंगा।''

आप बहुत भजन–अभ्यास करते थे। आप कई–कई दिन भूखे–प्यासे रहकर महाराज सावन सिंह जी की बताई युक्ति के मुताबिक अभ्यास करते थे। आपके अंदर सबसे बड़ी खूबी यह थी कि आप महाराज सावन सिंह जी के आगे नाचते थे। आमतौर पर आपने अपने पैरों में घुंघरूं बांधे होते थे। आप महाराज सावन सिंह जी को जहाँ भी देखते खूब नाचते थे।

आप एक कहानी सुनाया करते थे कि किसी गांव में अकाल पड़ गया। उस गाँव के सारे लोग गांव छोड़कर किसी और शहर में चले गए। वहाँ सिर्फ एक आदमी और एक औरत रह गए। जब वह भी भूखे मरने लगे तो उस औरत ने अपने आदमी से कहा, ''तू मुझे अपनी बहन बनाकर बेच दे अगर तू मुझे अपनी औरत कहेगा तो लोग तेरी बदनामी करेंगे।'' उस आदमी ने कहा कि मेरी बहन बिकाऊ है किसी ने उस औरत को गुलाम बनाकर खरीद लिया। वहाँ बारिश होने लगी तो उस औरत ने बादल से कहा, ''तू यहाँ बरस या न बरस क्योंकि यहाँ तो पहले ही बहुत अन्न–धन है लेकिन उस गांव में जाकर जरूर बरस

जहाँ किसी पति ने अपनी औरत को बहन बनाकर बेच दिया है ताकि कल कोई और ऐसा कर्म न करे।'' आप रात को सावन शाह के आगे मिन्नते करते थे कि आप किसी और को मिलें या न मिलें लेकिन इस गरीब खेमचंद को जरूर मिलें।

आप बलोचिस्तान से सावन शाह के दर्शन करने के लिए ब्यास आया करते थे। एक बार बलोचिस्तान की हद से पंजाब आना था तो आपको पुलिस ने पकड़ लिया, आपके साथ कुछ संगत भी थी। आपने थानेदार से कहा, ''हम हज करने जा रहे हैं हमारा मुर्शिद सावन शाह पूरा है तू हमें छोड़ दे।'' थानेदार ने आपकी एक नहीं सुनी और आपको जेल में डाल दिया। आपने संगत से कहा कि अभ्यास में बैठें। जब थोड़ी देर अभ्यास में बैठे तो सावन शाह ने अंदर से ऐसी चाबी मरोड़ी कि थानेदार ने आकर मिन्नते की, ''आप लोग यहाँ से जल्दी निकलें मेरी जान निकली जा रही है।'' आपने थानेदार से कहा, ''हमने तुझे पहले ही कहा था कि हमारा सतगुरु सावन शाह पूरा है।''

आप जितना ज्यादा महाराज सावन सिंह जी के नजदीक होते गए उतना ही आप ब्यास के लोगों को अच्छे नहीं लगते थे। वे लोग आपके साथ बुरा सुलूक करते थे। कई बार ब्यास के लोगों ने आपके ऊपर गर्म पानी भी डाल दिया। जब महाराज सावन सिंह जी ने ऐसी हालत देखी तो आपने भरी संगत में कहा, ''मस्तानेया! तुझे बागड़ का बादशाह बना दूं, पीर बना दूं?'' सन्त जब ऐसी भविष्यवाणियां करते हैं तो दुनिया कहती है कि सन्त ऐसे ही कहते हैं।

महाराज सावन सिंह जी ने आपको सच्चा प्रेमी जानकर अपने आश्रम से ड़ेढ सौ मील दूर आपके लिए एक गुफा बनाकर कहा, ''मस्तानेया! तुझे मेरे पास आने की जरूरत नहीं। मैं तुझे ऐसी चीज दूंगा जो तेरे सारे काम करेगी और ये लोग रोऐंगे।'' महाराज सावन

ने चोला छोड़ने से तीन साल पहले ही आपको यह कह दिया था कि तुझे मेरे आखिरी समय पर भी आने की जरूरत नहीं।

आपका हुजूर कृपाल के साथ सच्चा प्यार था। जब हुजूर कृपाल और सावन शाह दोनों इकट्ठे जाते तो मस्ताना जी उनके आगे नाचते और कहते, ''सावन शाह खुदा है और यह खुदा का बेटा है।'' आप यह भी कहा करते थे कि जिसने कमाई देखनी है वह दिल्ली जाए क्योंकि आप महाराज कृपाल को कमाई वाला कहते थे और जिसने बख्शीश देखनी है वह मेरे पास आए।

उस समय हमारे राजस्थान के इलाके में नहर का कोई सिस्टम नहीं था। यह बहुत गरीब इलाका था, सावन शाह ने वहाँ आपकी ड्यूटी लगाई थी। आप वहाँ गरीबों को सारा दिन नए-नए नोट बाँटते थे लेकिन नोट खत्म नहीं होते थे। आप कहा करते थे कि यह सावन शाह का खजाना है। कई बार सरकार ने आपको पकड़ा और जेल में भी डाला सरकार को शक था कि इसके पास नोट छापने वाली मशीन है। जब आपकी तलाशी लेते तो अंदर से कंकड़-पत्थर ही मिलते थे।

आप महाराज सावन सिंह जी के एक मस्त फकीर थे। आप बिल्कुल अनपढ़ थे, आप पंजाबी में भी दस्तखत करना नहीं जानते थे। आप 1960 में चोला छोड़ गए थे। आपने यह साबित करके दिखाया कि आज तक जितने भी ऋषि-मुनि हुए वे काल के धोखे में आकर गिर गए लेकिन किसी भी सन्त की हिस्ट्री में ऐसा नहीं आता कि जिसने सन्तमत में आकर कमाई की और वह सन्त गिरा हो।

आप कहते थे, ''इंसान! तू बेटे-बेटियों, कौम के आगे नाच करता है कितना अच्छा हो कि तू अपने सतगुरु के आगे नाचे, नाचने का मतलब कारोबार करना है ऐसा नहीं कि कूदने लग जाना है।''

ओहदा रब न रूसदा रब दी सों, जिहनूं रब मनोंण दा ढंग होवे,
ओहदा नचना भी अवाजत हो जावे, जिहनूं गुरु मनोंणे दा ढंग होवे।।

एक तरफ तो आप उन ऋषियों–मुनियों की मिसाल देते कि जिन्होंने बहुत लम्बी उम्रें बिताईं। किसी ऋषि ने साठ हजार साल तो किसी ने अट्ठासी हजार साल तप किया लेकिन फिर भी वे गिर गए। आप कहते, ''तू अपने गुरु का धन्य बोल दे यम तेरे नजदीक नहीं आएगा।''

राम भजन बिना मुक्ति कोई ना, राम बसाले काया में,
कनक कामनी स्यों न्यों ना छूटे, क्यों फस गया त्रिगुणी माया में,
बिन सतगुरु तेरा कोई ना साथी, ना बेटा ना बाप रे,
धन सतगुरु का बोलिऐ, तेरा कटे जन्म का पाप रे।।

आप प्यार से समझाते हैं, ''नाम के बिना मुक्ति नहीं अगर नाम मिल गया है तो नाम को अपनी काया में इस तरह समा लें जिस तरह नाड़ियों में खून हरकत करता है। नाम के बिना मुक्ति नहीं नाम को अपनी काया के अंदर बसा लें। तेरा न औरत के साथ प्यार छूटा, न धन–दौलत के साथ प्यार छूटा फिर तू किस तरह मुक्त हो सकता है? तू सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण तीनों गुणों में फँसा हुआ है। तू गुरु का धन्य ही कर ले तेरे जन्म का पाप कट जाएगा।''

लोभ मोह बाजार मांडया, बाजे कठन कठारी हो,
कामदेव की बजे पखावज, नाचे ममता नारी हो,
पाँच ठगों से प्यार तोड़ के, कर सतगुरु का जाप रे,
धन सतगुरु का बोलिऐ, तेरा कटे जन्म का पाप रे।।

आप कहते हैं कि काल ने किस तरह सुंदर शरीर की रचना की है? जिस तरह कोई महाजन अच्छी बिल्डिंग बनाकर उसमें अच्छा

सामान सजा देता है उसी तरह काल ने अच्छा शरीर बनाकर उसके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का बाजार लगा दिया और हम इस सौदे में ही लग गए हैं। जीव इन पांच ठगों को देखकर लुभाया बैठा है और चेतन माया इस इंसान को ठग लेती है। हे इंसान! तू इन पाँचों ठगों से प्यार तोड़कर सतगुरु के साथ प्यार कर ले।

गोरख नाथ मछंदर हारे, जब माया ने आँख दिखाई हो,
गोरख नाथ का घोड़ा बना, ऊपर चढ़ ऐड़ लगाई हो,
फिर न्यों बोली, वाह–वाह मेरा टरड़ा घोड़ा, नाचे आपो आप रे,
धन सतगुरु का बोलिएं, तेरा कटे जन्म का पाप रे।।

योगियों में मछंदर, गोरखनाथ का गुरु था। योगी लोग देह पलटने की क्रिया जानते हैं। जब मछंदर के दिल में काम वासना की अंधेरी चली तो उसके दिल में ख्याल आया कि यह लज्जत जरूर चखनी चाहिए। किसी राजा की मृत्यु हुई मछंदर उसके शरीर में चला गया। जब राजा उठकर बैठ गया तो पब्लिक के दिल में चाव पैदा हुआ कि हमारा राजा जिंदा हो गया है उन्होंने खूब खुशियां मनाई।

मछंदर जाते हुए गोरख को बताकर गया था कि जब मुझे बुलाना हो तो तू यह मंत्र पढ़ना, मैं उस समय वह शरीर छोड़ दूंगा। मछंदर भोगों में लग गया। जलंदरी नाथ ने गोरख को ताना दिया कि तुम बड़े योगी बने फिरते हो तुम्हारा गुरु तो भोग भोग रहा है। मछंदर ने अपनी पुलिस को हुक्म दे दिया था कि कोई कान फड़वाया हुआ जटाधारी योगी इधर न आए क्योंकि वह जानता था कि गोरख यहाँ आएगा।

गोरख के लिए वहाँ जाना बहुत मुश्किल था इसलिए गोरख ने डांस सीखा। राजा लोगों को अच्छे–अच्छे गाने सुनने का शौक तो होता ही है। गोरखनाथ गाना गाने वालों के साथ मिलकर महलों में जाकर

राग में ही बोलने लगा, ''*जाग मछंदरा गोरख आए।*'' रानियां पास ही बैठी थी। जब गोरख ने मंत्र बोला तो मछंदर राजा की देह छोड़कर वापिस अपनी देह में आ गया। यह हालत गोरखनाथ के गुरु मछंदर की थी।

इसी तरह गोरखनाथ अपना घर–बार छोड़कर जंगल में बैठा था। माया ने देखा कि यह त्यागी बना बैठा है मैं इसे देखूं तो सही! माया औरत का रूप धारण करके रात को गोरख के पास चली गई। माया ने गोरख से कहा, ''मेरा गांव नजदीक ही है तूफान आ गया था इसलिए मैं अपना घर भूल गई हूँ, मैंने रात काटनी है।''

गोरखनाथ ने कहा कि मैं औरत को अपने पास नहीं रहने देता। जब उस औरत ने थोड़ा बहुत कहा कि साधु दयावान होते हैं, गोरख बड़ाई में आ गया। गोरख ने माया से कहा, ''तू मेरी कुटिया में चली जा अंदर से कुंडी लगा लेना अगर मैं भी कहूँ तो कुंडी मत खोलना।'' गोरख ने सारी जिंदगी औरत नहीं देखी थी, जंगलों में ही रहा था। जब अभ्यास में बैठा आँखें बंद की तो अंदर वही माता खड़ी थी। गोरख ने उस औरत से कहा कि दरवाजा खोल। उस औरत ने कहा कि आपका ही हुक्म था मैं दरवाजा नहीं खोलूंगी, मन के वश होकर गोरख छत फाड़कर नीचे कूद गया।

सुबह हुई तो उस औरत ने गोरख से कहा, ''अब लोग आ जाएंगे और कहेंगे कि महात्मा के पास औरत। तू मुझे छोड़कर आ अगर मैं पानी में से गई तो मेरे कपड़े भीग जाएंगे लोग कहेंगे कि तू कहाँ से आई है? अगर तू मुझे अपने कंधे पर उठाकर नदी पार करवा दे तो तेरा क्या बिगड़ेगा?'' जब वह औरत गोरख के कंधे पर चढ़ी तो उसने याद करवाया कि तू मेरे बस में नहीं आता था। अब बता तू मेरा घोड़ा बना या नहीं? जब गोरख को पता चला तब उसने औरत को दूर फैंक दिया।

ब्रह्मा, विष्णु शिवजी हारे, जब माया ने रूप दिखाया हो,
भस्मासुर का रूप धार, शिवजी को पकड़ हिलाया हो,
नेजाधारी का फिर नेजा टूट गया, जब लगी कामदेव की थाप रे,
धन सतगुरु का बोलिऐ, तेरा कटे जन्म का पाप रे।।

दुनिया जिनमें मुक्ति ढूंढती है उनकी यह हालत है। ब्रह्मा की ड्यूटी दुनिया को पैदा करने की लगाई है। ब्रह्मा अपनी कचहरी में बैठा था जब उसकी लड़की सरस्वती आई तो वह उस लड़की के ऊपर ही मोहित हो गया। लड़की ने कहा, ''आप मेरे पिता होकर मेरे ऊपर बुरी निगाह डालते हैं।'' लड़की ने अपना मुँह पीछे की तरफ कर लिया।

एक राजा भस्मासुर हुआ है। उसे किसी ने बताया कि शिवजी वरों के दाता हैं अगर तू शिव की भक्ति करे तो शिव जी बहुत वर दे सकते हैं। भस्मासुर ने शिव की भक्ति की। शिव ने खुश होकर भस्मासुर को एक कड़ा देकर कहा, ''तू यह कड़ा जिसके सिर के ऊपर फेरेगा वह भस्म हो जाएगा।'' शिवजी के पास पार्वती थी भस्मासुर ने सोचा यह बहुत सुंदर है पहले शिव को ही क्यों न खत्म करूं! फिर मैं इस सुंदर औरत पर कब्जा कर लूंगा।

जब शिव को यह पता लगा कि यह मुझे खत्म करना चाहता है तो शिव भागा और पीछे-पीछे भस्मासुर भागा। शिव इतनी शक्ति तो रखता था आगे जाकर शिव ने एक पहाड़ को टक्कर मारी, शिव ने पहाड़ के अंदर अपना सिर छिपा लिया पीठ पीछे रह गई। भस्मासुर पीठ के ऊपर कड़ा घुमाता रहा लेकिन कुछ नहीं हुआ। विष्णु ने सोचा कि वरों के दाता शिव जी फँसे हुए हैं तो विष्णु ने पार्वती से भी सुंदर मोहिनी रूप धारण कर लिया और भस्मासुर से कहा, ''देख भले मानस! यह मर गया है अब हम इसका स्यापा करें।''

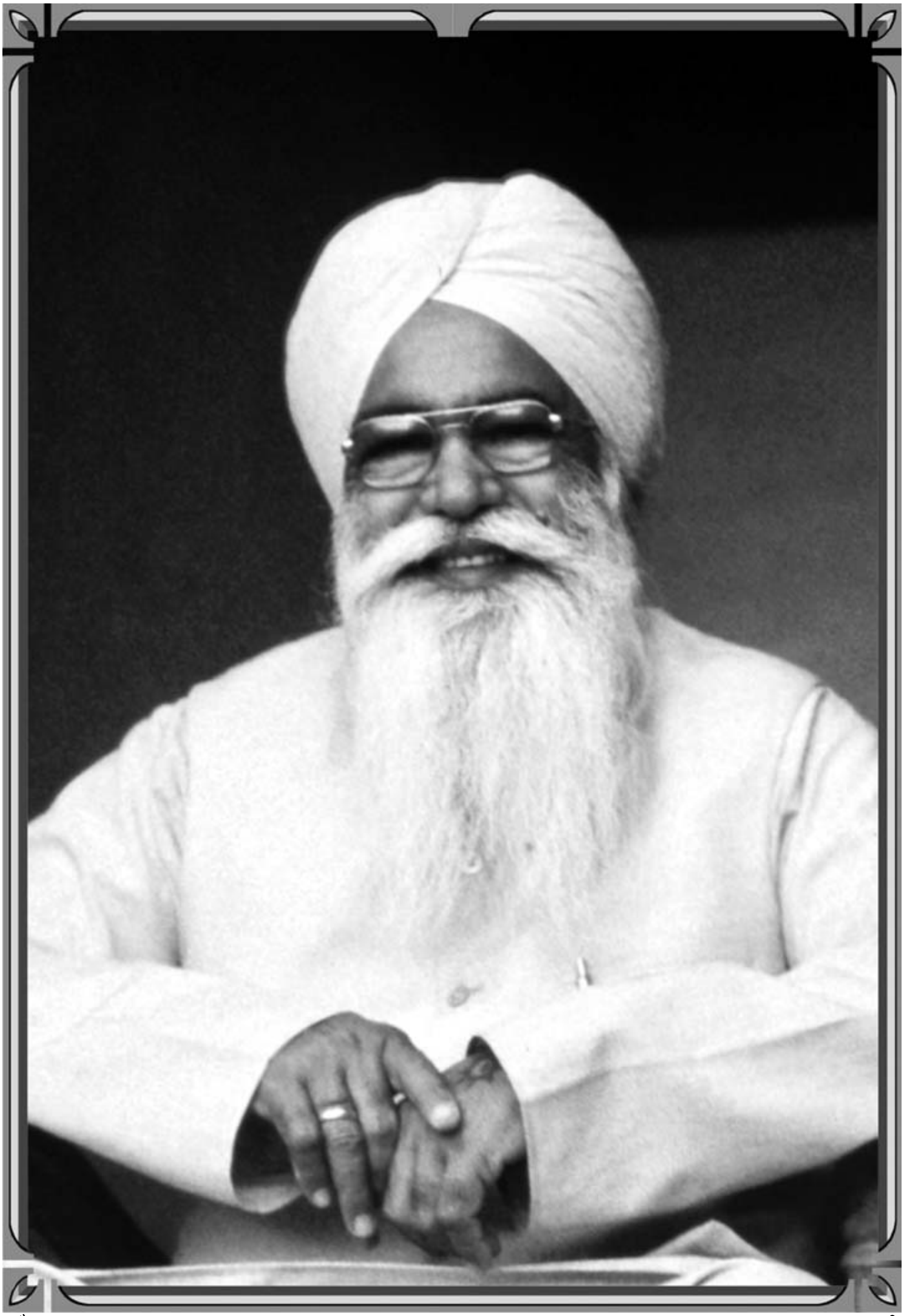

भस्मासुर ने कहा, ''मैं रोना नहीं जानता।'' मोहिनी ने कहा कोई बात नहीं मैं तुझे बता देती हूँ। मोहिनी ने उसे स्यापा करने का तरीका बताया कि पहले छाती पर इधर हाथ मारना फिर उधर हाथ मारना उसके बाद हाथ को सिर के ऊपर लेकर जाना है। भस्मासुर को स्यापे की सारी कवायत बताई तो जब उसका हाथ सिर के ऊपर लगा तो मोहिनी ने कहा, ''भस्म।'' भस्मासुर वहीं भस्म हो गया। विष्णु ने शिव से कहा कि अब तू निकल आ। जब शिव बाहर निकला उसने मोहिनी रूप देखा तो शिव के ऊपर भी काम का भूत सवार हो गया आगे मोहिनी पीछे शिव। तब विष्णु ने कहा, ''अरे भले मानस! होश कर तेरी क्या हालत है?'' फिर शिव को होश आई।

श्रृंगी ऋषि, दुर्वासा मुनि भी, कर कर के तप हार गऐ,
बड़े–बड़े बलि आऐ इस दुनिया में, काल शिकारी ने मार लिऐ,
वेद व्यास कहे पारासुर ऋषि को, तुझे नन्हा कहूं के बाप रे,
धन सतगुरु का बोलिऐ, तेरा कटे जन्म का पाप रे।।

मैंने कल सतसंग में श्रृंगी ऋषि की भी कहानी सुनाई थी, सबको याद ही है। दुर्वासा कृष्ण जी का गुरु था। कृष्ण जी दुर्वासा मुनि का बहुत आदर मान करते थे। जब दुर्वासा मुनि स्वर्गों में गया तब उसे उर्वशी परी ने ठग लिया शकुन्तला पैदा कर दी। आम बाजारों में इनके नाटक खेले जाते हैं। महात्मा कहते हैं कि बड़े–बड़े वलि इस दुनिया में आए लेकिन काल शिकारी ने सबको खत्म कर दिया।

पारासुर ऋषि ने अट्ठासी हजार साल तप किया, पूर्ण योगी होकर घर आ रहे थे। रास्ते में नदी पड़ती थी, ऋषि ने मल्लाह से कहा, ''मुझे नदी पार होना है।'' मल्लाह उस समय खाना खा रहा था, उसने कहा पहले खाना खा लूं फिर आपको नदी पार करा दूंगा। हठयोगियों के

पास बद्दुआ ही होती है। पारासुर ऋषि ने कहा, ''मैं श्राप देता हूँ।'' जो काम माँ–बाप करते हैं वह काम बच्चे भी कर लेते हैं। मल्लाह की लड़की ने कहा, ''पिताजी! आप खाना खाएं मैं इन्हें अभी ले जाती हूँ।''

लड़की ने रस्सा खोला चप्पू लिया बेड़ी को दूसरी तरफ ले जाकर कहा, ''आओ महात्मा जी! बैठो।'' ऋषि ने सारी जिंदगी जंगलों में रहकर किसी औरत की शक्ल नहीं देखी थी, जब रास्ते में आए तो ऋषि के मन में बुरा ख्याल आया। लड़की ने कहा हम मछली खाने वाले हैं, मेरे मुँह से बदबू आती है। ऋषि ने मन को नहीं रोका और कहा, ''तू योजन गंधारी हो जाए तुझमें से चार–चार कोस सोने की लपटें आएं।'' फिर लड़की ने ऋषि से कहा, ''अब हम मंद कर्म करेंगे सूरज देवता देखता है।'' ऋषि ने पानी की चुली भरी और कहा, ''यहाँ धुंध हो जाए लेकिन मन नहीं रोका।'' फिर लड़की ने कहा, ''जल देवता देख रहा है यह हमारे मंद कर्मों की गवाही देगा।'' ऋषि ने कहा, ''बरेती हो जाए।'' ऐसा करके ऋषि ने अपना अठ्ठासी हजार वर्ष का तप खत्म कर लिया लेकिन मन को नहीं रोका।

वेद व्यास यह कहानी लिखते हुए कहते हैं कि मैं तुझे बच्चा कहूँ या बाप कहूँ कि तूने इतनी मेहनत की लेकिन काम के वश होकर सारी फिजूल में गँवा ली।

साठ हजार वर्ष तप किया नारद ने, एक घड़ी में खोया था,
कामदेव की लगी चोट जब, मूंड पकड़कर रोया था,
बंदर का फिर मुँह करवा लिया, विष्णु को दिया श्राप रे,
धन सतगुरु का बोलिऐ, तेरा कटे जन्म का पाप रे।।

इसी तरह आप नारद ऋषि की मिसाल पेश करते हैं कि नारद ऋषि ने साठ हजार वर्ष तप किया था। नारद कहता था कि मैं काम से

ऊपर उठ चुका हूँ लेकिन काल बहुत बड़ी ताकत है। माया ने एक ऐसी लड़की का रूप धारण किया जिसकी बाँह पर लिख दिया कि जो इससे विवाह करेगा वह सदा के लिए अमर हो जाएगा।

नारद पढ़ा–लिखा था, उसने सोचा कि एक पंथ दो काज। शादी हो जाएगी और अमर भी हो जाएंगे हाँलाकि पहले वह शादी करवाने के हक में नहीं था लेकिन जब माया आकर सवार होती है तो इंसान की बुद्धि खत्म कर देती है। फिर नारद के दिल में यह ख्याल आया कि मैंने सारी जिंदगी अभ्यास किया है कहीं ऐसा न हो कि वह मुझे पसंद ही न करे क्योंकि मेरा शरीर कमजोर है। नारद भागा–भागा विष्णु के पास गया और विष्णु से कहा, ''तू मेरा सुंदर मुँह बना दे।'' विष्णु ने सोचा कहीं यह गिर न जाए! विष्णु ने नारद का मुँह बंदर की तरह बना दिया, उसकी शक्ल बिगाड़ दी।

जब नारद आकर सभा में बैठा तो उसके दिल में यह ख्याल था कि यह लड़की मेरे साथ ही शादी करेगी क्योंकि मैं सबसे सुंदर बनकर आया हूँ। लड़की नजदीक से गुजरी लेकिन बंदर की तरफ कौन देखे? नारद ने सोचा! लड़की ने मुझे देखा नहीं वह आगे होकर फिर कुर्सी पर बैठ गया। लड़की फिर एक तरफ होकर निकल गई। आखिर वह दो–तीन कुर्सियों के आगे जाकर बैठ गया। इस तरह बेचारे ने बहुत कोशिश की लेकिन लड़की ने नहीं देखा। आखिर लड़की ने किसी और के गले में माला डाल दी।

नारद ने लड़की से कहा, ''मैं सबसे सुंदर हूँ तूने मेरे साथ ठीक नहीं किया।'' लड़की ने कहा, ''तू शीशे में अपना मुँह तो देख!'' जब नारद ने शीशे में अपना मुँह देखा तो बहुत गुस्से में विष्णु के पास जाकर उसे श्राप दे दिया, ''तूने मेरे साथ मजाक किया है जिस तरह मैं औरत के पीछे ख्वार हुआ हूँ इसी तरह तू भी तन धारण करके

औरत के पीछे ख्वार होगा।'' तभी विष्णु का रामचन्द्र के रूप में अवतार हुआ। सीता को रावण ले गया, रामचन्द्र को सीता के वियोग में कितनी लड़ाईयां लड़नी पड़ी।

हिन्दुस्तान में राजा भोज संस्कृत का पंडित बहुत विद्वान था और उसके वजीर कालीदास ने भी बहुत से ग्रंथ लिखे हैं। कालीदास भी अच्छा काबिल विद्वान था। राजा भोज और कालीदास की घरवाली आपस में बातें कर रही थी, वे दोनों एक–दूसरे से कह रही थी कि मेरा पति मेरे वश में है। मैं अपने पति से जो चाहे सो करवा सकती हूँ।

शाम को जब राजा भोज घर आया तो रानी भानुमति कपड़ा ओढ़कर सो गई। राजा भोज ने उससे पूछा, ''क्या बात है?'' भानुमति ने कहा, ''मुझे रानी बनने का क्या फायदा मैंने तो कभी गधा भी नहीं देखा।'' राजा भोज ने कहा कि यह भी कोई बात है, दिन चढ़ने दे जितने गधे कहेगी उतने मंगवा दूंगा। रानी ने कहा, ''यह भी कोई बात है बंदा अभी मरता हो उसे पानी बाद में मिलने का क्या फायदा?''

राजा भोज ने कहा मैं तुझे बता देता हूँ कि गधा इस तरह का होता है। वह अपने हाथ अगली तरह जमीन पर लगाकर कहने लगा देख गधे की चार लातें होती हैं। भानुमति ने कहा, ''मुझे क्या पता बंदा गधे पर सवारी किस तरह करता है।'' राजा ने कहा, ''तू मेरे ऊपर चढ़कर देख ले?'' रानी उसके ऊपर चढ़ी और कहने लगी गधा कैसे बोलता है? राजा ऊँची सुर में इस तरह बोला जैसे गधा बोलता है, रानी खुश हो गई। राजा ने कहा देख! मैं तेरी खातिर गधा बना। मैंने तुझे अपने ऊपर भी चढ़ाया, तू मुझसे जो चाहे सो करवा सकती है। रानी ने कहा क्या तू मेरे ज्यादा बस में है। तू सुबह देखना कालीदास की दाढ़ी भी मुंडी हुई होगी। राजा को बहुत आश्चर्य हुआ।

जब वजीर कालीदास घर गया तो उसकी घरवाली ने भी उसी तरह किया। कालीदास की घरवाली ने कहा कि तू मेरे लिए क्या कर सकता है? कालीदास ने कहा तू जो कहे। घरवाली ने कहा क्या तू अपनी दाढ़ी मुंडवा सकता है? कालीदास ने कहा कि कोई बात नहीं मैं कल नाई के पास जाकर अपनी दाढ़ी मुंडवा आऊंगा। घरवाली ने कहा कि बंदा अब मरता हो और उसे पानी बाद में दिया जाए तो कल कब होगी? कालीदास ने कहा, ''अच्छा तू ही मेरी दाढ़ी काट दे।'' उसने दाढ़ी–मूँछ काट दिए। कालीदास ने कहा कि देख मैं तेरे साथ कितना प्यार करता हूँ मैंने तेरा हुक्म नहीं मोड़ा। घरवाली ने कहा, ''यह कोई बड़ी बात नहीं कि तू मेरे साथ प्यार करता है। राजा भोजराज अपनी रानी भानुमति के आगे गधा बना और उसे अपने ऊपर चढ़ाया।''

वे दोनों सुबह कचहरी में गए। राजा भोज ने सोचा रात की हालत का किसी को क्या पता है? राजा भोज कालीदास से मजाक करने लगा कि हिन्दुस्तान में हिन्दु लोगों में रिवाज है कि जिसका माता–पिता गुजर जाए वे दाढ़ी–मूँछ मुंडवाते हैं। राजा भोज ने मजाक किया कि तूने किस पर्व पर जाकर अपनी दाढ़ी मुंडवाई। काली दास ने कहा कि जिस पर्व पर आप गधे बने थे। वहाँ दोनों का पाज खुल गया।

इसी तरह हम अभ्यास करते हैं अपने आपको जति भी कहलवाते हैं लेकिन हमें अपने दिल में झाँककर देख लेना चाहिए कि हमें भी रात में कोई देख रहा होता है, हमें विषय–विकारों से बचना चाहिए।

घोर कलू में सच्चा सतगुरु, सच्ची ताकत आई हो,
परम सन्त का जिंदा राम, तैने माया पकड़ नचाई हो,
कहे 'मस्ताना' जी कर सच्चा सौदा, फिर नहीं साँच को आँच रे,
धन सतगुरु का बोलिऐ, तेरा कटे जन्म का पाप रे।।

आपने इस शब्द में किसी ऋषि–मुनि की निन्दा नहीं की, इतिहास में इसी तरह की कहानियां लिखी हुई हैं। दूसरी तरफ आप उस ताकत के बारे में बयान करते हैं जिसे प्राप्त करके हम काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पांच डाकुओं से बच सकते हैं। इस घोर कलयुग में हमारा ख्याल दुनिया में फैल चुका है, हम विषय–विकारों के अधीन हो चुके हैं। आप उन परम सन्तों के बारे में बयान करते हैं जो इस दुनिया में आए। जब गुरु नानकदेव जी बंगाल देश गए वहाँ की औरतें बहुत जादू जानती थी। आप जवानी अवस्था में वहाँ गए थे। आपका साथी मर्दाना भी वहाँ गया, वहाँ की औरतों ने मर्दाना को अपने पास रख लिया और वे औरतें रात को मर्दाना के साथ कामचेष्टा करती थी। जब गुरु नानकदेव जी ने देखा कि ये औरतें मेरे सेवक के साथ कामचेष्टा करती हैं तो आपने उन सबको सत उपदेश दिया, नाम शब्द की कमाई की तरफ लगाया और बंगाल से यह कुरीति सदा के लिए खत्म कर दी।

इसी तरह जहाँगीर बादशाह जब गुरु हरगोबिंद के दर्शनों के लिए आया उस समय गुरु हरगोबिंद जी महाराज बहुत जवान अवस्था में थे। जहाँगीर के दिल में ख्याल आया कि यह नौजवान हैं इनके पास इतनी औरतें आती हैं यह किस तरह काम से बच सकते हैं? जहाँगीर ने कुछ औरतों को सिखाकर भेजा कि तुम बार–बार जाकर इनका पता करो। औरतों ने कुछ दिन गुरु साहब की संगत की तो वे सब औरतें नामदान लेकर नाम की कमाई करने लगी।

इसी तरह गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज बहुत नौजवान और खूबसूरत थे। उनकी नामलेवा अनूपकौर ही उनके ऊपर खोटा ख्याल कर बैठी। गुरु गोबिंद सिंह जी ने हर किस्म के यत्न किए और उसे प्यार से समझाया कि सन्तों को अपना पिता समझना चाहिए। अनूपकौर उनके किले में ही रहती थी, एक बार आप बाहर से आ रहे थे तो

अनूपकौर ने आगा–पीछा देखकर आपको जफ्फी डालने की कोशिश की। गुरु गोबिंद सिंह जी ने उसे दो–तीन थप्पड़ मारकर दूर फैंक दिया।

हम घोर कलयुग में विषय–विकारों में फँस चुके हैं, हमारे ख्याल बहुत चंचल हो चुके हैं। कलयुग में सतपुरुष की सच्ची ताकत महात्मा का तन धारण करके आती है। सतपुरुष की ताकत हमें समझाती है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी में है। आप त्रिकुटी से नीचे दम न लें, ऊपर चढ़ें।

माया औरत का रूप धारण करके कबीर साहब के पास भी गई। उस समय कबीर साहब ताना बुन रहे थे। माया ने कहा, ''तू मेरा ताना पहले बुन दे।'' कबीर साहब ने कहा, ''मेरा यह उसूल है जो पहले आता है मैं उसका काम पहले करता हूँ।'' माया ने कहा, ''तू दो रूपये ज्यादा ले लेना।'' कबीर साहब ने पहचान लिया कि यह माया है। आपने माया से कहा, ''तू थोड़ी देर रूक, मैं अभी आकर तेरा ताना बुनता हूँ।'' आपने छुरी लाकर माया के कान और नाक काट दिए।

नाको काटी कानों काटी काट कूटकर डारी।
कहो कबीर सन्तों की बैरन तीन लोक की प्यारी।।

तू सन्तों की बैरन है, दुनियादारों की प्यारी है। तू दुनियादारों के पास जा। जब माया सन्तों के पास गई तो आपने उसकी ऐसी हालत की।

महात्मा कहते हैं कि आप शब्द–नाम प्राप्त करके ऐसे ही न बैठ जाएं। आप इन डाकुओं से ऊपर उठें, अपने आपको इनसे बचाएं और अपने आपको शब्द के हवाले करें। फिर आपको पता लगेगा कि किस तरह कलयुग में सच्ची ताकत आकर हमें उपदेश करती है, किस तरह वह सच्ची ताकत सतगुरु हमारी मदद करता है।

***

14 अगस्त 1977

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

मधुरता को कैसे कायम रखें?

(16 पी.एस. राजस्थान आश्रम)

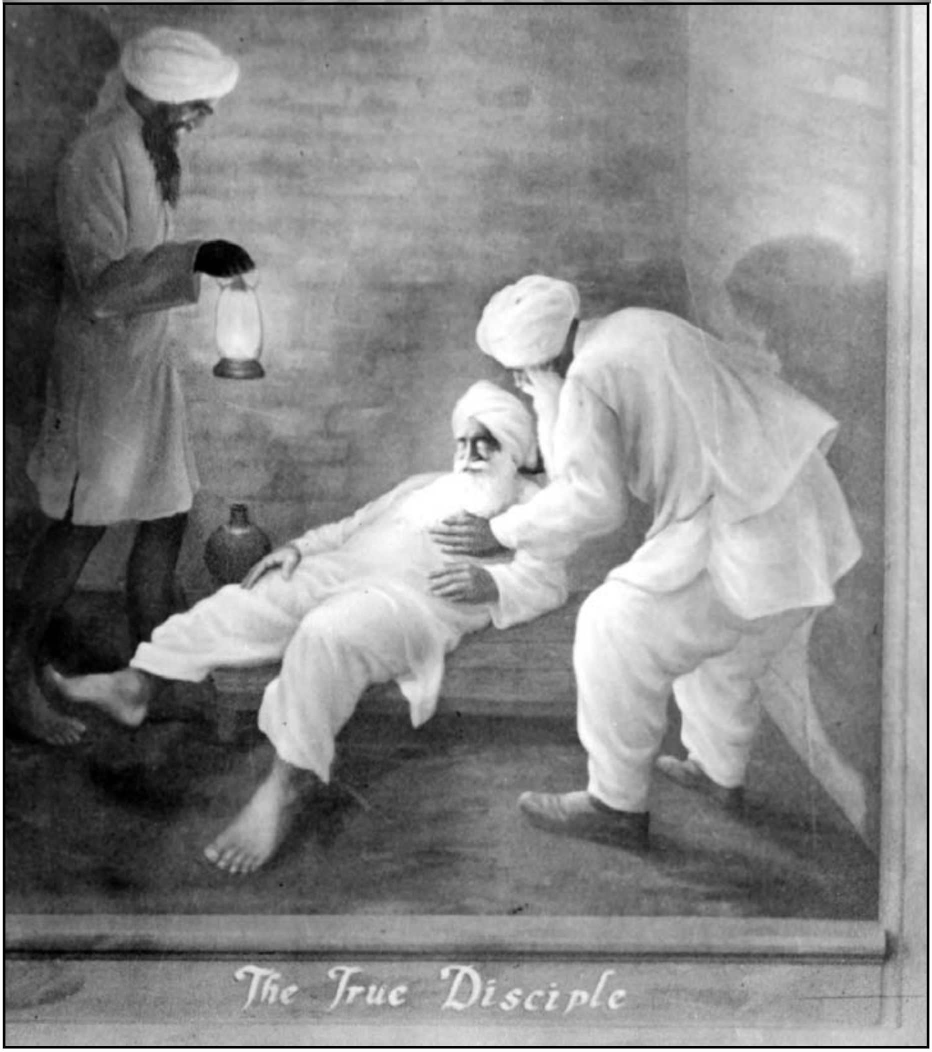

एक प्रेमी: *हमें यहाँ आकर जो मधुरता प्राप्त हुई है, हम यहाँ से जाने के बाद उस मधुरता को हर पल कैसे कायम रख सकते हैं?*

बाबा जी: आप लगातार इस पवित्र यात्रा को याद रखें अगर आप इस पवित्र यात्रा को याद रखेंगे तो आपको यह भी प्रेरणा मिलेगी कि हमने यहाँ पर क्या सीखा। यहाँ हर आत्मा को अभ्यास करने के लिए और पवित्र जिंदगी व्यतीत करने की प्रेरणा दी जाती है।

अगर हम भजन-अभ्यास करते हैं तो हमारे अंदर सतगुरु ताकत प्रकट हो जाती है। वैसे सतगुरु ताकत हमेशा ही पर्दे के पीछे सेवक के काम करती है लेकिन गुरु के ऊपर पूरा भरोसा और श्रद्धा रखनी भी बहुत जरूरी है।

इस यात्रा में हमें यहाँ से जो कुछ प्राप्त हुआ है हमने उसे भूलना नहीं। मुझे बहुत खुशी है कि हर ग्रुप के अंदर बहुत से प्रेमी अपनी पहले की हालत बताते हैं और बाद में जब यहाँ अभ्यास में तरक्की करते हैं तो उस तरक्की के बारे में भी मुझे बताकर जाते हैं।

मुझे बहुत खुशी होती है जो लोग अपने घर वापिस जाकर अपना भजन-अभ्यास जारी रखते हैं वे उस तरक्की को कायम कर लेते हैं। जो लोग घर वापिस पहुँचकर मन के दास बन जाते हैं या दुनिया के प्रभाव में आ जाते हैं उनको जब फिर राजस्थान आने का मौका मिलता है तब वे पश्चाताप करते हैं और कहते हैं, ''हम उस दया को खो बैठे।''

मेरे कहने का भाव इतना ही है कि आप लोगों में से ही बहुत से प्रेमी ऊँचे-ऊँचे अनुभव बताकर जाते हैं, वे जब फिर आते हैं उस वक्त उनकी क्या हालत होती है? यहाँ थोड़ा सा अरसा रहकर उनको अंदर किस तरह दया प्राप्त होती है!

6 अप्रैल 1981

***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

डर

(गुरु नानकदेव जी की बानी)

शेख बरम ने गुरु नानक जी से पूछा, ''क्या कोई इस संसार में **डर** से रहित है? अगर **डर** से बचना हो तो क्या करना चाहिए?''

गुरु नानकदेव जी जवाब देते हैं, ''देख प्यारेया! यह सारा संसार **डर** से ही बना है। बचपन में बच्चा माता-पिता से डरता है। थोड़ा बड़ा होने पर स्कूल जाता है तो टीचरों से डरता है। नौकरी करते हुए अपने अफसरों से डरता है। जवानी में धनी होने पर चोरों और टैक्सों से डरता है। बुढ़ापा आने पर मौत से डरता है।''

चाहे दुनिया में राष्ट्रपति ही क्यों न बन जाए, पद छिन जाने का डर लगा रहता है। बिना **डर** के कुछ भी नहीं। सच्चाई तो यह है कि हम सिर्फ इन्सानों से ही नहीं डरते बल्कि पशु-पक्षियों से भी डरते हैं। हम साँपों, शेरों और बघियाड़ों से भी डरते हैं कि कहीं ये हमें खा न जाएँ! ये खूंखार जानवर इन्सानों से डरते हैं कि कहीं ये हमें पकड़कर कैद न कर लें, काटकर खा न जाएँ!

अगर कोई किसी का कत्ल करता है तो वह पुलिस और फाँसी से डरता है। पाप करता है तो धर्मराज के दंड से डरता है। धर्मी की सदा जय होती है, उसका आगे चलकर आदर-सम्मान होता है। कबीर साहब कहते हैं:

डरिए जे पाप कमाइए।

सन्तमत का इतिहास गवाह है कि वक्त की हुकूमतों ने मालिक के प्यारों को बहुत कष्ट दिए। कबीर साहब को गंगा में फेंका गया। आपको गठरी में बाँधकर हाथी के आगे फेंका गया लेकिन आप

डरे नहीं। उस समय की हुकूमत ने भक्त नामदेव से कहा, ''तू इस रास्ते से हट जा, नहीं तो तेरी गर्दन काट देंगे।'' लेकिन नामदेव डरे नहीं इसी तरह प्रह्लाद को उसकी जादूगरनी बुआ आग में लेकर बैठ गई। प्रह्लाद को तपते हुए खम्भे से चिपटाया गया लेकिन वह डरा नहीं। गुरु गोबिंद सिंह जी का घर-घाट लूट लिया। आपके माता-पिता और बच्चों को शहीद कर दिया गया। आप जंगलों में नंगे पैर चलते रहे लेकिन डरे नहीं।

गुरु नानकदेव जी इस शब्द में शेख बरम को समझाने की कोशिश करते हैं कि इस संसार को पैदा करने वाला परमात्मा **डर** से रहित है। जिस पोल पर परमात्मा की ताकत काम करती है न वह डरता है न किसी को डराता है। अगर हमें वक्त का गुरु मिल जाए वह हमें 'नाम' दे दे और हम 'नाम' में एक हो जाएं तो हम भी **डर** से रहित हो सकते हैं।

मनोवैज्ञानिक इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि पाप से **डर** पैदा होता है। **डर** से चिन्ता पैदा होती है, चिन्ता चिता के समान है।

सन्त-महात्मा हमें समझाते हैं कि 'सुरत-शब्द' का अभ्यास करना चाहिए। सुरत को शब्द में इस तरह मिला लेना चाहिए जैसे बूँद समुंद्र में मिलकर समुंद्र ही बन जाती है। इसी तरह उस **डर** से रहित परमात्मा में मिलकर हम भी **डर** से रहित हो सकते हैं।

भक्तों और सांसारिक लोगों का आपस में मेल इसलिए नहीं होता क्योंकि काल वक्त की हुकूमतों में बैठकर अपना काम करता है कि किस तरह भक्तों को शब्द-नाम की कमाई से हटाया जाए। भक्त **डर** से रहित होते हैं अपने मिशन से पीछे नहीं हटते।

एक महात्मा जंगल में बैठकर अभ्यास कर रहा था। बहुत से लोग उसके दर्शन करने जाते थे। जहाँ सुगन्ध हो वहाँ भँवरे आ ही जाते हैं। एक वेश्या भी आपके दर्शन करने जाया करती थी। वह महात्मा से पूछती, ''आप औरत हैं या मर्द?'' महात्मा कोई जवाब न देते। कुछ समय बाद वह महात्मा बीमार हो गए। उनका अन्त समय आने वाला था। वेश्या ने उनसे फिर पूछा कि आप औरत हैं या मर्द? महात्मा ने कहा, ''थोड़ा समय रह गया है। मैं तुझे एक-दो दिन बाद बताऊँगा, तू मेरे अन्त समय पर आना।'' उस वेश्या ने फिर आकर कहा कि अब तो आप जाने वाले हैं। मेरे सवाल का जवाब तो अधूरा ही रह जाएगा। महात्मा ने कहा, ''मैं पुरुष हूँ, मर्द हूँ।'' वेश्या ने कहा, ''मर्द तो आप पहले से ही दिखते थे, लेकिन आपने ऐसा पहले क्यों नहीं कहा?'' महात्मा ने कहा, ''माता! यह मन बेईमान है। क्या पता कब धोखा दे जाता? आज मैं सही मायनों में मर्द बनकर परमात्मा के पास पेश होऊँगा।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि एक झूठ को सच बनाने के लिए कई झूठ बोलने पड़ते हैं। एक जंगल में बहुत से ऋषि-मुनि रह रहे थे। वहाँ पारस ऋषि ने लोमस ऋषि से सवाल किया कि किस तरह इन्सान लोक या परलोक में शोभा प्राप्त करता है? लोमस ऋषि ने कहा, ''सच बोलने वाला यहाँ भी और आगे भी शोभा प्राप्त करता है।'' चाहे कोई पापी हो, उसे भी सच पसन्द है; सभी मजहबों के लोग सच पसन्द करते हैं।

महाभारत में आता है कि पांडवों ने कृष्ण भगवान से पूछा, ''हमने अच्छे कर्म किए हैं क्या हमें स्वर्ग मिल जाएँगे?'' कृष्ण भगवान ने कहा, ''हिमालय पर चढ़ जाओ स्वर्ग में पहुँच जाओगे।'' पांडव बहुत कठिन साधना साधकर हिमालय पर चढ़ गए। उनमें से

चार भाई तो बर्फ में दबकर मर गए। युधिष्ठिर के पैर का एक अंगूठा बर्फ में गल गया। उसने कृष्ण भगवान से विनती की ''महाराज! मेरे सारे भाई बर्फ में दबकर मर गए हैं। मैंने जिंदगी में कभी झूठ नहीं बोला, मेरे पैर का अंगूठा क्यों गल गया?'' कृष्ण भगवान ने कहा, ''तुमने जिदंगी में एक बार झूठ बोला था इसलिए तुम्हारे पैर का अंगूठा गल गया है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कर्म धर्म कर मुक्त मंगाही, मुक्त पदार्थ नाम ध्याही।

गुरु नानकदेव जी महाराज इस शब्द में प्यार से समझा रहे हैं कि किस तरह यह सारी सामग्री **डर** में है। सतगुरु के बिना 'नाम' नहीं मिलता और नाम की कमाई के बिना कोई भी **डर** से रहित नहीं हो सकता।

भै विचि पवणु वहै सदवाउ॥ भै विचि चलहि लख दरीआउ॥

आप कहते हैं, ''पवन, दरिया, समुंद्र ये सब भय में हैं। उस परमात्मा के **डर** में हैं।''

भै विचि अगनि कढै वेगारि॥ भै विचि धरती दबी भारि॥

अग्नि देवता दुनिया के सारे काम करता हुआ भी **डर** में है। जीवों के कर्मों का हिसाब रखने वाला धर्मराज भी दरबार के अंदर **डर** में है कि कहीं मुझसे कोई गलत काम न हो जाए।

भै विचि इंदु फिरै सिर भारि॥ भै विचि राजा धरम दुआरु॥

देवताओं का शिरोमणि देवता इन्द्र भी भय में है। बादल भी भय में हैं कि हमें बारिश करनी है।

भै विचि सूरजु भै विचि चंदु॥ कोह करोड़ी चलत न अंतु॥

सूरज, चन्द्रमा भय में हैं कि कब उदय और अस्त होना है। सब उस परमात्मा के **डर** से अपनी-अपनी ड्यूटियाँ कर रहे हैं।

भै विचि सिध बुध सुर नाथ॥ भै विचि आडाणे आकास॥

ऋद्धियों-सिद्धियों के मालिक जो चमत्कार दिखाकर दुनिया को परेशान करते हैं वे भी परमात्मा के भय में हैं। आकाश में उड़ने वाले पक्षी भी भय में हैं। आकाश जो बिना खम्भों के खड़ा है वह भी परमात्मा के भय में है।

भै विचि जोध महाबल सूर॥ भै विचि आवहि जावहि पूर॥

आप कहते हैं कि समय-समय पर बड़े-बड़े योद्धा, महाबली, सूरमा, जो दुनिया में पैदा हुए वे भी परमात्मा के भय में हैं।

अगर किसी को लड़वाना हो या किसी कौम के विरोध में बोलना हो तो धार्मिक नेता उसे सूरमा कहते हैं। हमारी देह ने जो मजहब अख्तियार किया होता है हम उसी को धर्म समझते हैं और धर्म की रक्षा के लिए एक-दूसरे का कत्ल करके शहीद कहलवाते हैं।

कबीर साहब, गुरु नानकदेव जी और सभी सन्त, सूरमा या योद्धा उसे कहते हैं जिसने साधना साधकर अपने ऊपर काबू पा लिया हो। जो पाँच कर्म इन्द्रियों और पाँच ज्ञानेन्द्रियों पर काबू पा लेता है वही महाबली है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मन जीते जग जीत।

अगर हम मन को जीत लेते हैं तो जग के बनाने वाले को अपने ऊपर मेहरबान कर लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

सूरा सो पहचानिए, जो लड़े दीन के हेत।
पुर्जा पुर्जा कट मरे, कबहूं ना छाड़े खेत॥

वही सूरमा है जो अपने दीन के लिए लड़ता है। हमारा धर्म परमात्मा है। गुरु अर्जुनदेव जी ने सुखमनी साहिब में बताया है:

सगल धर्म में श्रेष्ठ धर्म, हर का नाम जप निर्मल कर्म।

कबीर साहब अपनी बानी में लिखते हैं:

गगन दोआमा वाजया, पड़या निशाने घाव।
खेत जो मान्डे सूरमा, अब जूझन का दाव॥

हमारा खेत तीसरा तिल है। जो एकाग्र होकर इसे अपना घर बना ले, उसे अंदर से शब्द की आवाज आनी शुरू हो जाती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मैं ते पंज जवान गुरु थापी दित्ती कन्ड जिओ।

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गांठ तीसरे तिल पर है। जब हम तीसरे तिल पर पहुँच जाते हैं तो पूरा गुरु जिसका हाथ हमारी पीठ पर है वह हमें शब्द धुन के साथ इन पाँच डाकुओं के साथ लड़वाता है। जो सेवक दिन-रात इनसे लड़ते हैं वे जानते हैं कि सतगुरु 'शब्द-रूप' होकर हमारी मदद कर रहा है।

कबीर साहब कहते हैं कि तलवारों, तोपों से लड़ने वाले सूरमा नहीं, असली सूरमा वही हैं जो सतगुरु की दया से इन पाँच जवानों से लड़कर जीत प्राप्त करते हैं। सन्त-सतगुरु किसी को कमजोर दिल नहीं बनाते। मैं पहले ही बता चुका हूँ, ''जो पाप करता है वही डरता है।''

सगलिया भउ लिखिआ सिरि लेखु॥
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु॥

हर जीव के पैदा होते ही उसकी किस्मत में **डर** लिखा जाता है। सिर्फ परमात्मा ही **डर** से रहित है। गुरु नानक जी कहते हैं:

भय काहूं को देत न भय मानत आन।

मालिक के प्यारे न किसी से डरते हैं न किसी को डराते हैं। एक पश्चिमी प्रेमी ने 77 आर.बी. आश्रम में मुझसे पूछा कि सबसे बड़ा पाप क्या है? मैंने कहा, ''डरना ही सबसे बड़ा पाप है।''

नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल।

परमात्मा ही **डर** से रहित है। रामचन्द्र भी देह धारकर डरते रहे। उन्होंने अपनी जिंदगी डर में ही गुजारी। उनकी हिस्ट्री में आता है जब वे बनवास गए तब उनका छोटा भ्राता लक्ष्मण बारह साल तक धनुष बाण लेकर उनके पहरे पर खड़ा रहा।

मुझे सन् 1947 से 1950 के बीच पंजाब के आठ राज्यों के राजाओं के साथ मिलने का मौका मिला। उनमें से कोई भी राजा **डर** से रहित नहीं था। किसी ने आर्मी के सौ आदमी तो किसी ने आर्मी के दो सौ आदमी पहरे पर लगाए हुए थे फिर भी वे निश्चिंत नहीं थे। मामूली सी आवाज़ होने पर अलार्म बज जाता था।

केतीआ कन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''देख भाई शेख बरम! लोग कृष्ण की बहुत कहानियाँ गाते हैं और पढ़ते-पढ़ाते भी हैं। वेद-शास्त्रों पर बहुत विचार करते हैं लेकिन उस मौत के फरिश्ते से निडर नहीं होते।''

केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल॥

अब आप कहते हैं, ''लोग राम-कृष्ण की कहानियाँ गा-गाकर नाचते हैं और उनके नाम पर पैसे माँगते हैं। पैसे इकट्ठे करने के लिए जमीन पर कलाबाजियाँ लगाते हैं लेकिन फिर भी मौत के **डर** से बच नहीं सकते।''

बाजारी बाजार महि आई कढ़हि बाजार॥

बहुरूपिए लोग रूप बदलकर लोगों का मनोरंजन करने के लिए बाजारों में नाचते हैं और किस्से कहानियाँ सुनाकर लोगों को गुमराह करते हैं लेकिन वे भी मौत से डरते हैं।

गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल॥
लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार॥

वे लोग शहरों में, गाँवों में और धर्मस्थानों पर जाकर राम और कृष्ण का स्वांग बनाकर लोगों को खुश करने के लिए पागलों जैसे गीत गाते हैं। उन्होंने नकली हार पहने होते हैं। यह देह मिट्टी की ढेरी है इसने मिट्टी में ही मिल जाना है।

गुरु नानकदेव जी का भाव किसी की निन्दा करना नहीं है। जब दुनिया कुमार्ग पर चल पड़ती है भगवान की भक्ति करना छोड़ देती है और 'शब्द-नाम' को भूलकर बाहर के रीति-रिवाजों में फँस जाती है तब सन्त-महात्मा ऐसे लोगों को समझाते हैं कि प्यारेयो! पानी को मथने से मक्खन नहीं निकलेगा, मक्खन तो दूध को मथने से ही निकलेगा। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

पानी मथे हाथ कुछ नाहीं, क्षीर मथन आलस भारा।

जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार॥
गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु॥

गुरु नानकदेव जी पढ़ने-पढ़ाने को ज्ञान नहीं कहते। आप वेदों-शास्त्रों को पढ़कर या बातों से ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। ज्ञान प्राप्त करना लोहे जितना कठोर है। आप कहते हैं:

ज्ञान ध्यान धुन जाणिए अकथ कहावे सोए।

करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं अगर हमारे अच्छे कर्म हों तो हमें गुरु मिले, 'नाम' मिले। हम उस परमात्मा को किसी हिकमत या चतुराई से प्राप्त नहीं कर सकते।

नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाईआ॥

अगर परमात्मा हम पर दया करता है तो हमारा मिलाप सतगुरु से करवाता है और सतगुरु दया करके हमें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ते हैं।

अफसोस से कहना पड़ता है कि हम सतसंगी भी उस परमात्मा सतगुरु की दया को नहीं समझते। हम दया तभी समझते हैं जब हमारी तरक्की हो जाए, बीमारी से छुटकारा हो जाए या बच्चे अच्छे हों। अगर घर में मामूली सा नुकसान हो जाए तो हमारा सारा भरोसा उड़ जाता है जबकि दुनियावी फायदे और नुकसान हमारे अपने किए हुए कर्मों के ही हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

ठीका ठौर न पावी गुरु को दोष लगावी।

ऐसे लोग अंदर जाकर शब्द को नहीं सुनते और गुरु को दोष देते हैं कि गुरु ने हमारी मदद नहीं की।

एहु जीउ बहुते जनम भरमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाईआ।

यह जीव बहुत से जन्मों में कभी कुत्ता, कभी बिल्ला बनकर आखिर जब सन्तों के द्वारे पर आता है तो सन्त देखते हैं कि यह बेचारा कभी कहीं जन्म लेता है तो कभी कहीं जन्म लेता है। सन्त इस पर तरस खाकर इसे 'नाम' की दात देकर कहते हैं, ''प्यारेया! हम तुझे 'शब्द-नाम' की आवाज सुनाते हैं। तू इस आवाज के पीछे-पीछे चल तेरा जन्म-मरण कट जाएगा तू वहाँ पहुँच जाएगा जहाँ न मौत है न पैदाइश है।'' गुरु अमरदेव जी कहते हैं:

अनेक जोनि भरमाए बिन सतगुरु मुक्ति न पाए।
फिर मुक्ति पाए लग चरणी सतगुरु शब्द सुनाए॥

सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ॥

जब सतसंगी के अंदर शब्द प्रगट हो जाता है वह अंदर गुरु से मिलाप कर लेता है तब दुनिया में होका देकर कहता है, ''भाइओ! गुरु की दात को चोर चुरा नहीं सकता, आग जला नहीं सकती, हवा उड़ा नहीं सकती। सतगुरु जीवन दाता है सारी दुनिया का सोना-चाँदी उस दात का मूल्य नहीं चुका सकता।''

सतिगुरि मिलिए, सचु पाईआ
जिन्ही विचहु आप गवाइआ॥
जिनि सचो सच बुझाइआ॥

गुरु नानकदेव जी आखिर में हमें यही हिदायत करते हैं कि गुरु वह हस्ती है जो कभी फना नहीं होती। उस सच को उस नाम को वही प्राप्त कर सकते हैं जो अपने आपको शब्द गुरु के हवाले कर देते हैं।

हमें भी चाहिए कि हम गुरु नानकदेव जी के कहे मुताबिक शब्द-नाम की कमाई करें। अपने अंदर से हौमें-अहंकार को निकाल कर उस परमात्मा के बन्दे बनें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

अमृतवेला

अमेरिका

सुबह अमृतवेला है। सतगुरु सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हम पर बहुत उपकार किया, दया की जिसे हम बयान नहीं कर सकते। उन्होंने हमें भक्ति करने का मौका और भक्ति का दान दिया है।

सन्तों का दिया हुआ नामदान शिष्य के लिए जीवन का दान होता है। यह नाम न पैसों से मिलता है न माँगने से मिलता है और न ही हम इस नाम को खेतों में उगा सकते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं: ***चल उठ नाम जप।*** सारी रात सोकर व्यतीत न कर। शरीर को नींद की जितनी जरूरत है उतनी ही दे। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं: ***काला तुझे ना व्यापी नानक मिटे अपाध।***

काल ने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी पाँच डाकुओं की फौजें बनाई हैं ये फौजें हर व्यक्ति के इर्द-गिर्द रहती हैं। ये पाँचों डाकु इस मौके की तलाश में रहते हैं कि कब जीव को अपने कब्जे में करें।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''अगर आप नाम की कमाई करेंगे शरीर के नौं द्वार खाली करके आँखों के पीछे आकर शब्द के साथ जुड़ेंगे तो ये पाँचों डाकु आपको तंग नहीं करेंगे। आपके साथ छल-कपट करने वाला मन भी शान्त हो जाएगा।''

भजन-अभ्यास के लिए घर में बैठें चाहे यहाँ बैठें। हर प्रेमी को अपना भजन-अभ्यास शुरू करने से पहले पाँच पवित्र नामों को अच्छी तरह याद कर लेना चाहिए। हाँ भई! आँखें बंद करके प्रेम-प्यार से अपना अभ्यास शुरू करें। ***

12 जून 1992

धन्य अजायब

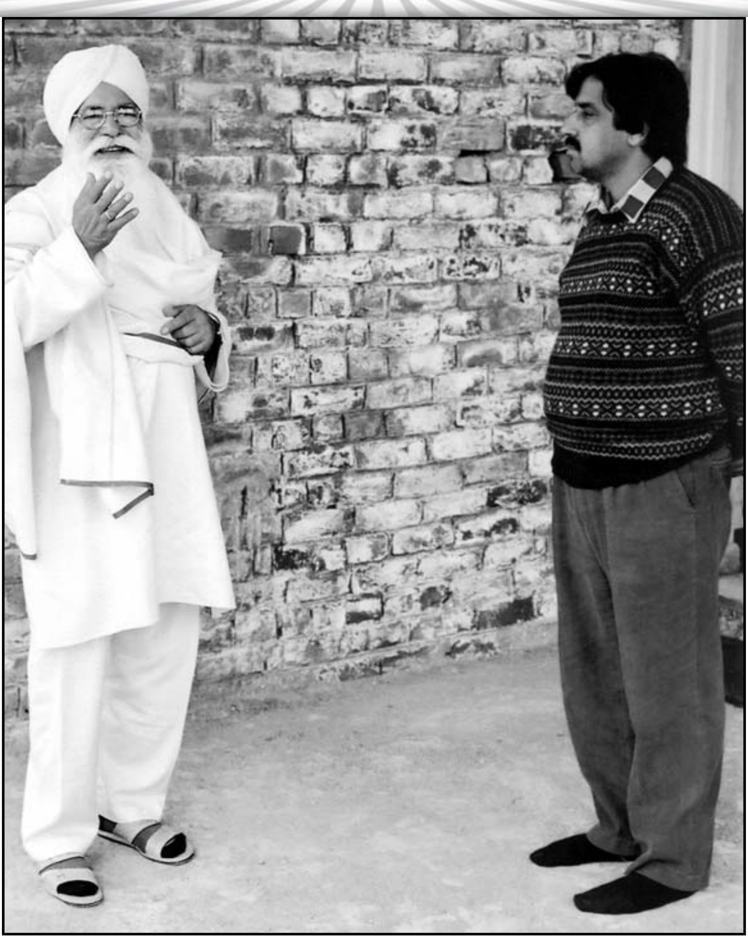

मासिक पत्रिका प्राप्त करने के लिए संपर्क करें

अजायब बानी

आर.एस.जी – 01,
वी.आई. पी. कालोनी,
रिद्धि सिद्धि इन्कलेव (प्रथम)
श्री गंगानगर – 335 001 (राजस्थान)
99 50 55 66 71 व 80 79 08 46 01

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम

18 से 20 मई 2018,

कम्युनिटी हॉल,

भेरा इन्कलेव,
पश्चिम विहार (नजदीक पीरागढ़ी)
नई दिल्ली – 11 00 87
98 10 21 21 38 व 98 18 20 19 99